"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 06, Issue: 05, Sept. – Oct. 2019 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) – 5.266

सशक्त नाटककार : मोहन राकेश

डॉ. देशमुख दस्तगीर सरदारमियां
लोकसेवा महाविद्यालय, गारखेडा परिसर,
औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत

भूमिका-

मोहन राकेश हिंदी साहित्य के उन चुनिंदा साहित्यकारों में हैं जिन्हें 'नयी कहानी आंदोलन' का नायक माना जाता है और साहित्य जगत में अधिकांश लोग उन्हें उस दौर का 'महानायक' कहते हैं। उन्होंने 'आषाढ़ का एक दिन' के रूप में हिंदी का पहला आधुनिक नाटक भी लिखा। कहानीकार–उपन्यासकार प्रकाश मनु भी ऐसे ही लोगों में शामिल हैं, जो नयी कहानी के दौर में मोहन राकेश को सर्वोपरि मानते हैं। मनु ने कहा, ''नयी कहानी आंदोलन ने हिंदी कहानी की पूरी तस्वीर बदली है। उस दौर में तीन नायक मोहन राकेश, कमलेश्वर और राजेंद्र यादव रहे। मैं मोहन राकेश को सबसे ऊपर मानता हूं। खुद कमलेश्वर और राजेंद्र यादव भी राकेश को हमेशा सर्वश्रेष्ठ मानते रहे।'

मोहन राकेश नई कहानी आन्दोलन के सशक्त हस्ताक्षर थे। पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी और अंग्रेज़ी में एम ए किया। जीविकोपार्जन के लिये अध्यापन किया। कुछ वर्षो तक 'सारिका' के संपादक भी रहे। 'आषाढ़ का एक दिन','आधे अधूरे' और लहरों के राजहंस के रचनाकार। 'संगीत नाटक अकादमी' से सम्मानित। ३ दिसम्बर १९७२ को नयी दिल्ली में आकस्मिक निधन। मोहन राकेश मूलतः एक सिंधी परिवार से थे। उनके पिता कर्मचन्द बहुत पहले सिंध से पंजाब आ गए थे। वे हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नाट्य लेखक और उपन्यासकार हैं। समाज के संवेदनशील व्यक्ति और समय के प्रवाह से एक अनुभूति क्षण चुनकर उन दोनों के सार्थक सम्बन्ध को खोज निकालना, राकेश की

कहानियों की विषय-वस्तु है। मोहन राकेश की डायरी हिंदी में इस विधा की सबसे सुंदर कृतियों में एक मानी जाती है।

मोहन राकेश को कहानी के बाद सफलता नाट्य-लेखन के क्षेत्र में मिली। हिंदी नाटकों में भारतेंदु और प्रसाद के बाद का दौर मोहन राकेश का दौर है जिसें हिंदी नाटकों को फिर से रंगमंच से जोड़ा। हिन्दी नाट्य साहित्य में भारतेन्दु और प्रसाद के बाद यदि लीक से हटकर कोई नाम उभरता है तो मोहन राकेश का। हालाँकि बीच में और भी कई नाम आते हैं जिन्होंने आधुनिक हिन्दी नाटक की विकास-यात्रा में महत्त्वपूर्ण पड़ाव तय किए हैं; किन्तु मोहन राकेश का लेखन एक दूसरे ध्रुवान्त पर नज़र आता है। इसलिए ही नहीं कि उन्होंने अच्छे नाटक लिखे, बल्कि इसलिए भी कि उन्होंने हिन्दी नाटक को अँधेरे बन्द कमरों से बाहर निकाला और उसे युगों के रोमानी ऐन्द्रजालिक सम्मोहक से उबारकर एक नए दौर के साथ जोड़कर दिखाया। वस्तुतः मोहन राकेश के नाटक केवल हिन्दी के नाटक नहीं हैं। वे हिन्दी में लिखे अवश्य गए हैं, किन्तु वे समकालीन भारतीय नाट्य प्रवृत्तियों के द्योतक हैं। उन्होंने हिन्दी नाटक को पहली बार अखिल भारतीय स्तर ही नहीं प्रदान किया वरन् उसके सदियों के अलग-थलग प्रवाह को विश्व नाटक की एक सामान्य धारा की ओर भी अग्रसर किया। प्रमुख भारतीय निर्देशकों इब्राहीम अलकाजी, ओम शिवपुरी, अरविन्द गौड़, श्यामानन्द जालान, राम गोपाल बजाज और दिनेश ठाकुर ने मोहन राकेश के नाटकों का निर्देशन किया।

मोहन राकेश के दो नाटकों आषाढ़ का एक दिन तथा लहरों के राजहंस में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेने पर भी आधुनिक मनुष्य के अंतर्द्वंद और संशयों की ही गाथा कही गयी है। एक नाटक की पृष्ठभूमि जहां गुप्तकाल है तो दूसरा बौद्धकाल के समय के ऊपर लिखा गया है। आषाढ़ का एक दिन में जहां सफलता और प्रेम में एक को चुनने के द्वंद्व से जूझते कालिदास एक रचनाकार और एक आधुनिक मनुष्य के मन की पहेलियों को सामने रखते हैं वहीं प्रेम में टूटकर भी प्रेम को नहीं टूटने देने वाली इस नाटक की नायिका के रूप में हिंदी साहित्य को एक अविस्मरणीय पात्र मिला है। लहरों के राजहंस में

और भी जटिल प्रश्नों को उठाते हुए जीवन की सार्थकता, भौतिक जीवन और अध्यात्मिक जीवन के द्वन्द, दूसरों के द्वारा अपने मत को दुनिया पर थोपने का आग्रह जैसे विषय उठाये गए हैं। राकेश के नाटकों को रंगमंच पर मिली शानदार सफलता इस बात का गवाह बनी कि नाटक और रंगमंच के बीच कोई खाई नही है। मोहन राकेश का तीसरा व सबसे लोकप्रिय नाटक आधे अधूरे है । जहाँ नाटककार ने मध्यवर्गीय परिवार की दमित इच्छाओ कुंठाओ व विसंगतियो को दर्शाया है । इस नाटक की पृष्ठभूमि एतिहासिक न होकर आधुनिक मध्यवर्गीय समाज है । आधे अधूरे मे वर्तमान जीवन के टूटते हुए संबंधो ,मध्यवर्गीय परिवार के कलहपुर्ण वातावरण विघटन ,सन्त्रास ,व्यक्ति के आधे अधूरे व्यक्तित्व तथा अस्तित्व का यथात्मक सजीव चित्रण हुआ है । मोहन राकेश का यह नाटक , अनिता औलक की कहानी दिन से दिन का नाट्यरुपांतरण है ।

मोहन राकेश की प्रमुख कृतीयाँ :-

उपन्यास :- अंधेरे बंद कमरे, अन्तराल, न आने वाला कल।

नाटक :- आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे अधूरे, पैर तले की जमीन (अधूरा, कमलेश्वर ने पूरा किया), सिपाही की मां, प्यालियां टूटती हैं, रात बीतने तक, छतरियां, शायद।

एकांकी :- अण्डे के छिल्के, बहुत बड़ा सवाल

कहानी संग्रह :- क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ, पहचान तथा अन्य कहानियाँ, वारिस तथा अन्य कहानियाँ।

निबंध संग्रह :- परिवेश

अनुवाद :- मृच्छकटिक, शाकुंतलम।

यात्रा वृताँत :- आखिरी चट्टान तक

मोहन राकेश के उपन्यास 'अंधेरे बंद कमरे', 'ना आने वाला कल', 'अंतराल' और 'बकलम खुद' है। इसके अलावा 'आधे अधूरे', 'आषाढ़ का एक दिन' और 'लहरों के राजहंस' उनके कुछ

मशहूर नाटक हैं। 'लहरों के राजहंस' नाटक का निर्देशन रामगोपाल बजाज और अरविंद गौड़ जैसे रंगमंच के बड़े नामों ने किया। 'उसकी रोटी' नामक कहानी राकेश ने लिखी, जिस पर 1970 के दशक में फिल्मकार मणि कौल ने इसी शीर्षक से एक फिल्म बनाई। फिल्म की पटकथा खुद राकेश ने लिखी थी। आधुनिक हिन्दी नाटक के विकास यात्रा में 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' तथा 'आधे - अधूरे' ने महत्वपूर्ण योगदान निभाया है ।

मोहन राकेश बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है । किंतु नाटककार के रूप में उनका स्थान सर्वोपरी है । आधुनिक हिन्दी नाटक के विकास यात्रा में 'आषाढ़ का एक दिन' , 'लहरों के राजहंस' तथा 'आधे - अधूरे' ने महत्वपूर्ण योगदान निभाया है । नाटक के बारे में राकेश की धारणा है कि जिस नाटक में रंग मंचीय अपेक्षाओं को उपेक्षा हुई, साहित्यिक मूल्य रहते हुए भी नाट्य कृति नहीं मानी जा सकती। नाटक के बारे में राकेश की धारणा है कि जिस नाटक में रंग मंचीय अपेक्षाओं को उपेक्षा हुई, साहित्यिक मूल्य रहते हुए भी नाट्य कृति नहीं मानी जा सकती। यह कथन से स्पष्ट होता है कि नाटक की संपूर्णता अभिनय – प्रदर्शन में निर्भर है । इस दृष्टि से 'आषाढ़ का एक दिन' , 'लहरों के राजहंस' , 'आधे - अधूरे' और 'पैर तले की जमीन' दूसरों को नमूना बनकर रहता है **आषाढ़ का एक दिन :-**

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक की श्रृंखला में 'आषाढ़ का एक दिन' एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में उल्लेखनीय है । यह राकेश का सर्वप्रथम, बहुचर्चित तथा लोक प्रिय नाटक है । इसमें कवि कालिदास को एक प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। 'आषाढ़ का एक दिन' में ऐतिहासिक पात्रों के साथ काल्पनिक पात्र भी है । राकेश ने इतिहास और कल्पना के सामंजस्य से प्राचीन और अर्वाचीन तथ्यों को समन्वित करके शाश्वत सत्य को युगानुरूप पुष्ट किया है । इस नाटक का कालिदास इतिहास का कालिदास नहीं, राकेश – कालीन कालिदास है ।

लहरों के राजहंस :-

'लहरों के राजहंस' मोहन राकेश का दूसरा, सशक्त नाटक है । 'आषाढ़ का एक दिन' यदि भावना में भावना का वरण की कहानी है तो 'लहरों के राजहंस' नारी के आकर्षण – विकर्षण की अनुभूति की अभिव्यक्ति है । एक में समर्पित नारी का चित्रण है तो दूसरे में रूप पर गर्व करने वाली नारी की विविध मन स्थितियों के संदर्भों का आलेखन है । कालिदास अपार मानसिक संघर्षों से पीड़ित आधुनिक मानव का प्रतिरूप तो नन्द प्रवृत्ति और निवृत्ति में पिसकर छटपटाते हुए प्राणों को लेकर जीवन के चौराहे पर खड़ा है । इसमें नाटककार राकेश ने भौतिकता और आध्यात्मिकता के मध्य उलझे हुए व्यक्ति की चेतना को नन्द और सुन्दरी के द्वंद्व के माध्यम से मुखरित करने का प्रयास किया है ।

आधे – अधूरे :-

यह नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' और 'लहरों के राजहंस' की तुलना में भिन्न कोटि का नाटक है । आलोच्य नाटक में आज के मानव की अनियंत्रित एवं अंतहीन यंत्रणाओं के बीच नारी मुक्ति भावना, वैवाहिक संघर्षों की विडंबना, पुरुष के अधूरेपन तथा विघटनशील जीवन मूल्यों का प्रकर्ष है । समूचा नाटक घर के चार दीवार के अंदर के अधूरापन की कथा व्यंजित करता है । 'आधे – अधूरे' में राकेश ने रूमानियत और इतिहास के संदर्भों की उपेक्षा करके औसत दर्जे के आदमी को अपनी विषय वस्तु का आधार बनाया है ।

संक्षेप में कहें तो 'आषाढ़ का एक दिन' और 'लहरों के राजहंस' की तुलना में 'आधे - अधूरे' हिन्दी नाटककारों की इक्कीसवीं सदी में जाने वाली पीढ़ी के लिए चुनौती के नवीन आयाम उद्घाटित करता ।

पैर तले की ज़मीन :-

पैर तले की ज़मीन' मोहन राकेश का अंतिम, किंतु अधूरा नाटक है जिसे उनके आत्म मित्र कमलेश्वर ने राकेश के मृत्यु के बाद पूरित किया । अनिता राकेश के शब्दों में :- " पैर तले

की ज़मीन " को अपनी आँखें मूंद जाने से वर्षों पहले ही राकेश ने लिखा था । जिस दिन धोखा लेकर वे सदा के लिए चले गये थे तब भी टाइपरैटर पर इसी टक का एक पृष्ठ, आधा टाइप किया, आधा खाली रह गया था ।" (पैर तले की ज़मीन, अनिता राकेश, पृष्ठ - 5) इस नाटक में राकेश ने शब्दों और नेपथ्य की ध्वनियों के मिले – जुले प्रभाव को रंगमंच पर एक नये प्रयोग के रूप में प्रस्तुत कर वर्तमान युग में व्यक्ति के सामाजिक मूल्य – विघटन तथा मानवीय संबंधों के खोखलापन को मूर्त किया है ।

अत: साहित्यकार प्रेम जनमेजय का कहना है, ''मोहन राकेश की रचनाओं में गजब की प्रयोगशीलता थी।उनके हर नाटक और उपन्यास में कुछ अलग है। एक महान लेखक होने के अलावा उनमें लेखकीय स्वाभिमान था। इसको लेकर वह विख्यात हैं। नयी कहानी दौर में उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई।'' हिंदी साहित्य में उनके अमूल्य योगदान के लिए राकेश को 1968 में संगीत नाटक अकादमी सम्मान से

नवाजा गया। 3 जनवरी, 1972 को महज 47 साल की उम्र में राकेश का निधन हो गया। नई पीढ़ी के साहित्यकारों में मोहन राकेश को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होने अनेक विधाओं में हिन्दी-साहित्य को कई अनुपम कृतियाँ प्रदान की है। वे यात्रावृत्त विधा एवं नवीन ना मोहन राकेश के नाटक के अध्ययन हमें यह निष्कर्ष पर पहुंचाते है कि पारिवारिक – वातावरण, शिक्षा - दीक्षा तथा अनुप्रासंगिक क्रिया – कलापों के एकीकृत रूप से नाटककार मोहन राकेश का व्यक्तित्व और कृतित्व का निर्माण हुआ ।

यद्यपि राकेश की पकड़ नाटक के साथ कहानी, उपन्यास जैसी साहित्यिक विधाओं में भी थी तो भी इनकी ख्याति नाटककार के रूप में सचमुच अद्वितीय रही । हिन्दी नाटक और रंगमंच को एक सही तथा सार्थक पहचान देने की दिशा में मोहन राकेश का स्थान हिन्दी नाटककारों अग्र गण्य है। उन्होंने अपनी मौलिक दृष्टि, भावपूर्ण संवेदना तथा जीवन के अनुभव – वैविध्य के आधार पर हिन्दी नाटक को कथ्य एवं शिल्प पर परंपरागत

दृष्टिकोण से मुक्त कर विकास के नये आयामों से परिचित कराया । मोहन राकेश नाट्य-परम्परा के प्रवर्त्तक तथा नई कहानी के प्रतिस्थापक के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1 मोहन राकेश और उनके नाटक - डॉ. गिरीश रस्तोगी

2 मोहन राकेश और उनका रंगकर्म - जयदेव तनेजा

3 मोहन राकेश और उनका साहित्य - वीरेंद्र मेंहदिरत्ता

4 आधे-अधुरे - समीक्षा - प्रो. राजेश शर्मा